देहरादून की लीची पर गर्मी का असर

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड में अत्यधिक गर्मी के कारण, जहाँ **तापमान 42 डिग्री सेल्सियस से अधिक** हो गया है, लीची सूख गई है तथा इसके फटने से किसानों को नुकसान पहुँचा है।

//

मुख्य बिंदु:

- हीट वेव में वृद्धि ने फलों की समग्र वृद्धि और परिपक्वता को प्रभावित किया है
- **लीची के पेड़ मृदा से जल अवशोषित करते हैं**, जिससे **बीज की वृद्धि और बीजाणु के विकास में सहायता** मिलती है।
- कंदकोशिका का **लाल बाह्य आवरण** (छिलके) गर्मी के संपर्क में आने से **फट गए हैं**, जिससे **कंद-कोशिका की लोच में कमी** आई है, जिससे **फल के रस, आकार और सु-स्वादुता पर असर** पड़ा है।
- भौगोलिक संकेत (GI) प्रमाण-पत्र से मान्यता प्राप्त रामनगर लीची की **चंडीगढ़, दिल्ली और हरियाणा** जैसे आस-पास के राज्यों में काफी मांग है।
- फल-विशेषज्ञों ने लीची की तुड़ाई जल्दी करने के प्रति आगाह किया है, क्योंकि बिहार की लीची उत्तराखंड की लीची से पहले बाज़ार में आती है।

- चूँकि बिहार की लीची उत्तराखंड की लीची से पहले बिक जाती है, इसलिये फल-विशेषज्ञ/पोमोलॉजिस्ट लीची को जल्दी तोड़ने की सलाह नहीं देते हैं।
    - समय से पहले तोड़ने पर लीचियाँ खट्टी और छोटी आकार की हो सकती हैं।
    - पेड़ों पर बचे अपरिपक्व लीची के फलों में समुत्थानशीलता बढ़ाने के लिये लीची बागानों में सुबह और शाम पानी देने की सिफारिश की जाती है, साथ ही बोरोन तथा **जिबरेलिक एसिड** का भी उपयोग किया जाता है।

लीची

- **वानस्पतिक वर्गीकरण:** लीची **सैपिंडेसी (Sapindaceae)** वर्ग से संबंधित है और अपने स्वादिष्ट, रसीले, पारदर्शी बीज-पत्र अर्थात् खाने योग्य गूदे के लिये जानी जाती है।
- **जलवायु संबंधी आवश्यकताएँ:** लीची **उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में पनपती** है जिसके लिये **नम (आर्द्रता) परिस्थितियों की आवश्यकता** होती है। यह **कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में लगभग 800 मीटर** की ऊँचाई तक सबसे अच्छी तरह से फलती है।
- **मृदा की प्राथमिकता:** लीची की खेती के लिये आदर्श परिस्थितियों में मिट्टी की भूमिका महत्त्वपूर्ण है जिसके लिये **गहरी, कार्बनिक पदार्थों से भरपूर** और अच्छी तरह से **सूखी हुई दोमट मिट्टी** होनी चाहिये।
- **तापमान संवेदनशीलता:** लीची अत्यधिक तापमान के प्रति संवेदनशील है। यह **गर्मियों में 40.5 डिग्री सेल्सियस** से ऊपर के तापमान या सर्दियों में ठंडे तापमान को सहन नहीं कर पाती है।
- **वर्षा प्रभाव:** लंबे समय तक बारिश विशेषकर पुष्प-मंजरी आने के दौरान, परागण की क्रिया में बाधक हो सकती है जो लीची की फसल को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/dehradun-litchis-hit-by-heat